परम अद्भुत और रोमांचकारी संवाद को सुना।।७४।।

तात्पर्य

भगवद्गीता का उपक्रम संजय से धृतराष्ट्र की कुरुक्षेत्र-युद्ध विषयक जिज्ञासा से हुआ था। गुरु व्यासदेव की कृपा से यह सम्पूर्ण घटनाचक्र संजय के हृदय में स्फुरित हुआ, जिससे वह युद्ध-स्थिति का वर्णन कर सका। श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद को अद्भुत कहा गया है, क्योंकि दो महापुरुषों में इतना महिमामय वार्तालाप न तो इससे पूर्व में कभी हुआ है और न भविष्य में ही कभी होगा। यह इसलिए भी अद्भुत है कि भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं अपना और अपनी शक्तियों का अर्जुन से वर्णन कर रहे हैं, जो उनका परमभक्त है। श्रीकृष्ण को जानने के लिए जो अर्जुन के चरणचिह्नों का अनुसरण करेगा, उसका जीवन सुखमय और सफल हो जायगा। संजय को यह अनुभूति हुई और जैसे-जैसे वह यह समझने लगा, वैसे ही धृतराष्ट्र को भी वह वार्तालाप कह सुनाया। अब, अन्त में निष्कर्ष है कि जहाँ श्रीकृष्ण-अर्जुन हैं, वहीं शाश्वत् विजय है।

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं　　परम्।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्।।७५।।

व्यासप्रसादात्=व्यासदेव की कृपा से; **श्रुतवान्**=सुना है; **एतत्**=इस; **गुह्यम्**=परम गोपनीय; **अहम्**=मैंने; **परम्**=परम; **योगम्**=योग को; **योगेश्वरात्**=योगेश्वर; **कृष्णात्**=श्रीकृष्ण से; **साक्षात्**=साक्षात्; **कथयतः**=कहते हुए; **स्वयम्**=स्वमुख से।

अनुवाद

श्रीव्यासदेव की कृपा से मैंने इस परम गोपनीय योग को अर्जुन से स्वयं कहते हुए साक्षात् योगेश्वर श्रीकृष्ण से सुना है।।७५।।

तात्पर्य

व्यासदेव संजय के गुरु थे। संजय स्वीकार करता है कि उनकी कृपा से ही वह श्रीभगवान् को तत्त्व से जान सका। तात्पर्य यह है कि श्रीकृष्ण को अपने-आप जानने के लिए प्रयत्न करने के स्थान पर गुरु के माध्यम से जानना चाहिए। यद्यपि अनुभव साक्षात् होता है, परन्तु गुरुरूपी पारदर्शी माध्यम का पथ अधिक उत्तम है। यही शिष्य-परम्परा का रहस्य है। यदि गुरु प्रामाणिक हों, तो उनके मुखारविन्द से गीतामृत का श्रवण करना अर्जुन के समान साक्षात् श्रीकृष्ण से सुनना है। जगत् योगियों और ध्यानियों से परिपूर्ण है, परन्तु श्रीकृष्ण तो सम्पूर्ण योगों के ईश्वर हैं। श्रीकृष्ण ने गीता में जीव को अपने शरणागत हो जाने का स्पष्ट आदेश दिया है। ऐसा करने वाला परमोच्च योगी है। छठे अध्याय के अन्तिम श्लोक में प्रमाण है, **योगिनामपि सर्वेषाम्।**

नारदजी साक्षात् श्रीकृष्ण के शिष्य और व्यासदेव के गुरु हैं। अतः परम्परा में